

सं.ओ.वि./77-84/32785.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै.एस.जी.स्टील प्रा.लि., प्लाट नं. 6, बलबगड़, के श्रमिक श्री साविर हुसैन तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-68-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित तीनों लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला हैः—

क्या श्री साविर हुसैन की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं.ओ.वि./एफ.डी./77-84/32792.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै.एस.जी.स्टील, प्रा.लि., प्लाट नं. 6, बलबगड़, के श्रमिक श्री मुतिवल रहमान तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-68-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित तीनों लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला हैः—

क्या श्री मुतिवल रहमान की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं.ओ.वि./एफ.डी./97-84/32799.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै.ट्रांस आटो, 1-5 डी.एल.एफ. इन्डस्ट्रीजल एरिया, मधुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री भोपाल सिह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5413-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-68-श्रम/57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित तीनों लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला हैः—

क्या श्री भोपाल सिह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं.ओ.वि./एफ.डी./141-84/32806.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै.सुरेन्द्रा एण्ड ब्रदर्ज, 104, डी.एन.एफ., मधुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री श्री राम तभा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5413-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20

जून, 1968 के साथ पढ़ने हुए अधिसूचना सं. 11496-जी-श्रम- ३४ श्रम-५७/३७/ 12/५ दिनांक 7 फरवरी 1958 द्वारा उत्तर अधिनियम की धारा 7 के प्रतीत गठित अम न्यायालय करीदाराद को विवादप्रस्त या उससे नुसार या उससे सम्बन्धित तोचे लिखा सामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उत्तर प्रस्तावों तथा अधिक नीति का तो विवादप्रस्त भासना है या विवाद गे सुमंगल अवधार संवैधित सामला है :—

कथा श्री श्रीमन्मुक्ति सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

प. गो.वि./एफ.डी./143—84/32813.—चिन्हितयाजा के नाम साथ की राय है कि मे. प्रसीजन स्टील एण्ड इन्डिनियरिंग कंस, 14/4 मधुरा रोड, करीदाराद, के श्रमिक श्री राम दास नामक प्रत्यक्षी के मध्य इसमें इसके वाद लिखित सामले में कोई आद्योगिक विवाद है ;

ग्राहक द्वारा हरियाणा के राज्यपाल विवाद का न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उम्मारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-श्रम-68-श्रम-५७/११२४५, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उत्तर अधिनियम की धारा 7 के प्रतीत गठित अम न्यायालय विवादप्रस्त या उससे नुसार या उससे सम्बन्धित तोचे लिखा सामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उत्तर प्रस्तावों तथा प्रतिक नीति के नाम से द्वारा दिया गया विवाद में पुराना पश्चासंवैधित सामला है :—

क्या श्री राम दास श्री सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

प. गो.वि./एफ.डी./142—84/32970.—चिन्हितयाजा के नाम साथ की राय है कि मे. भास्तीय इन्डिनियरिंग स्टील क. लि., 13/4 मधुरा रोड, करीदाराद, के श्रमिक श्री दीपक नामक प्रत्यक्षी के मध्य इसके वाद लिखित सामले में कोई आद्योगिक विवाद है ;

ग्राहक द्वारा हरियाणा के राज्यपाल नियामनीकरण द्वारा दिया गया इसके वाद लिखित सामला चाहनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव श्रीद्योगिक विवाद नाम सं. 11497 की धारा 10 की उम्मारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के नाम से द्वारा अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-68-श्रम-५७/११२४५, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उत्तर अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय करीदाराद को विवादप्रस्त या उससे नुसार या उससे सम्बन्धित तोचे लिखा सामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उत्तर प्रस्तावों तथा प्रतिक के ग्राहक नाम विवादप्रस्त नाम है वा विवाद में पुराना अवधा संवैधित सामला है :—

क्या श्री हीरा नन्द की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

प. गो.वि./एफ.डी./144—84/32827.—चिन्हितयाजा के राज्यपाल की राय है कि मे. दीपक न्यूमैटिक्स प्रा.लि., 8 किमि. मधुरा रोड, करीदाराद, के श्रमिक श्री घासी लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित सामले में कोई आद्योगिक विवाद है ;

ग्राहक द्वारा हरियाणा के राज्यपाल विवाद का न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट दरना चाहनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उम्मारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रीमद्भुद्धा नाम सं. 11495-जी-श्रम-68-श्रम-५७/११२४५, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उत्तर अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय करीदाराद को विवादप्रस्त या इससे नुसार या इससे सम्बन्धित तोचे लिखा सामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उत्तर प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के ग्राहक नाम विवादप्रस्त सामला है वा विवाद में पुराना अवधा संवैधित सामला है :—

क्या श्री घासी लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?